International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 03(III), July- September, 2025, pp. 170-175

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिंतन

Renu Kumari[1*] | Dr. Varsha Sagorkar[2]

[1]Research Scholar, Barkatullah University Bhopal.
[2]Associate Professor, Government Hamidiya Arts & Commerce Degree College, Barkatullah University Bhopal.

[*]Corresponding Author: rohinisingh627@gmail.com

Citation: Kumari, R., & Sagorkar, V. (2025). पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिंतन. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(03(III)), 170–175.

सार

भारत के राजनीतिक और दार्शनिक चिंतन में पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का स्थान अत्यंत विशिष्ट और महत्वपूर्ण है। उन्होंने भारतीय संस्कृति, परंपरा और मानवीय मूल्यों पर आधारित राजनीति का एक वैकल्पिक दर्शन प्रस्तुत किया, जिसे उन्होंने "'एकात्म मानववाद'" नाम दिया। यह सिद्धांत भारतीय जीवनदृष्टि का दार्शनिक आधार है, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समन्वय पर बल देता है। पण्डित उपाध्याय का मानना था कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति केवल आर्थिक या औद्योगिक विकास से नहीं, बल्कि उस राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्यों की दृढ़ता से सुनिश्चित होती है। उनके राजनीतिक चिंतन का मूल उद्देश्य एक ऐसी व्यवस्था की स्थापना करना था, जो मानव जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक पक्षों में संतुलन स्थापित कर सके। उन्होंने पश्चिमी राजनीतिक विचारधाराओं पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों की सीमाओं को स्पष्ट करते हुए कहा कि भारत को अपनी स्वदेशी सोच के अनुरूप, सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि से प्रेरित राजनीतिक ढाँचा अपनाना चाहिए। उनके अनुसार राजनीति का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि समाज की सेवा और जनकल्याण सुनिश्चित करना है। दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय राजनीति में "'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद'", "'स्वदेशी अर्थनीति'" और "'सामाजिक समरसता'" जैसे विचारों को केंद्रीय स्थान दिया। उन्होंने राजनीतिक संगठन को भी एक सांस्कृतिक साधना के रूप में देखा और जनसंघ के माध्यम से राजनीति में मूल्याधारित आचरण की स्थापना का प्रयास किया। उनका चिंतन आज भी भारतीय लोकतंत्र के लिए प्रासंगिक है, क्योंकि यह समावेशी विकास, नैतिक राजनीति और आत्मनिर्भरता की राह सुझाता है।

शब्दकोश: *पण्डित दीनदयाल उपाध्याय, राजनीतिक चिंतन, एकात्म मानववाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, स्वदेशी अर्थनीति, सामाजिक समरसता, भारतीय संस्कृति, नैतिक राजनीति।*

प्रस्तावना

भारत के आधुनिक राजनीतिक इतिहास में पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का नाम एक ऐसे दूरदर्शी, राष्ट्रनिष्ठ और मौलिक चिंतक के रूप में लिया जाता है, जिन्होंने भारतीय संस्कृति और जीवनमूल्यों के आधार पर राजनीति का एक स्वदेशी दर्शन प्रस्तुत किया। पाश्चात्य राजनीतिक विचारधाराओं के प्रभाव के युग में उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि भारत की राजनीतिक व्यवस्था का आधार भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना,

[*] *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

अध्यात्म और मानवीय मूल्यों पर होना चाहिए, न कि केवल भौतिक विकास पर। वे राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं मानते थे, बल्कि उसे समाज की सेवा और व्यक्ति के समग्र विकास का साधन समझते थे।

पण्डित उपाध्याय का राजनीतिक चिंतन 'एकात्म मानववाद की अवधारणा पर आधारित है। इस सिद्धांत में उन्होंने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच संतुलित और सुसंगत संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। उनका मत था कि मानव जीवन के चार पुरुषार्थ – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष – परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक–दूसरे के पूरक हैं। अतः राजनीतिक व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति की आत्मा, बुद्धि, हृदय और शरीर इन चारों आयामों के विकास का अवसर प्रदान करे। उन्होंने पश्चिमी पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों की आलोचना करते हुए कहा कि दोनों ही विचारधाराएँ मानव के भौतिक पक्ष पर अत्यधिक बल देती हैं और उसके आध्यात्मिक पक्ष की उपेक्षा करती हैं।

भारतीय राजनीति में दीनदयाल उपाध्याय ने यह विचार स्थापित किया कि राष्ट्र का निर्माण केवल भौगोलिक सीमाओं या राजनीतिक सत्ता से नहीं होता, बल्कि उसकी आत्मा संस्कृति में निहित होती है। इसलिए उन्होंने भारतीय संस्कृति' को राष्ट्र की आत्मा के रूप में परिभाषित किया। उनका विश्वास था कि जब तक राजनीति संस्कृति से प्रेरित नहीं होगी, तब तक सामाजिक न्याय और समरसता स्थापित नहीं हो सकती। वे कहते थे – राजनीति का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि जनसेवा और जनकल्याण है।

आज के वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद और सांस्कृतिक संक्रमण के युग में दीनदयाल उपाध्याय के विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। उनका "एकात्म मानववाद" न केवल एक राजनीतिक दर्शन है, बल्कि जीवन–दर्शन है जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तीनों को एक सूत्र में पिरोता है। इस विचारधारा में मानवता की व्यापक दृष्टि, भारतीय संस्कृति की आत्मा और सामाजिक न्याय का भाव सम्मिलित है। यही कारण है कि उनका चिंतन भारतीय राजनीति में आज भी मार्गदर्शक प्रकाशपुंज के रूप में विद्यमान है।

विषय की पृष्ठभूमि

भारतीय राजनीति के इतिहास में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का स्थान उन विरल चिंतकों में है जिन्होंने राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का साधन न मानकर उसे समाज निर्माण का माध्यम माना। स्वतंत्रता के पश्चात जब भारत पर पश्चिमी विचारधाराओं जैसे समाजवाद, पूँजीवाद और साम्यवाद का प्रभाव बढ़ रहा था, तब दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति, धर्म, नैतिकता और अध्यात्म पर आधारित ''"एकात्म मानववाद"'' का दर्शन प्रस्तुत किया।

उनके विचारों ने यह स्पष्ट किया कि भारत की राजनीति केवल आर्थिक या भौतिक विकास पर केंद्रित न होकर, मनुष्य और समाज के समग्र विकास की दिशा में प्रयत्नशील होनी चाहिए। वे राजनीति को जीवन के अन्य आयामों से पृथक नहीं मानते थे, बल्कि उसे "धर्माधारित सामाजिक व्यवस्था" का अंग समझते थे।

उनका दर्शन भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़ा हुआ था, जहाँ व्यक्ति, समाज और राष्ट्र एक अविभाज्य इकाई के रूप में देखे जाते हैं। इसी कारण उनका राजनीतिक चिंतन आज भी भारतीय लोकतंत्र और राष्ट्रवाद की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध होता है।

अध्ययन का महत्व

दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक दर्शन आज के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवेश में अत्यंत प्रासंगिक है। वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद और नैतिक मूल्यों के ह्रास के दौर में उनके विचार हमें भारतीय जीवन–दृष्टि के पुनरुत्थान की ओर प्रेरित करते हैं।

उनका "एकात्म मानववाद" समाज में समानता, समरसता और आत्मनिर्भरता की भावना को पुष्ट करता है। उन्होंने यह संदेश दिया कि किसी भी राष्ट्र का विकास केवल भौतिक साधनों से नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों और नैतिकता पर आधारित नीति–निर्माण से ही संभव है।

अतः इस अध्ययन का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह भारतीय राजनीति की आत्मा को समझने का अवसर प्रदान करता है और आधुनिक शासन व्यवस्था में नैतिक दृष्टि के पुनर्स्थापन की दिशा में नई दृष्टि देता है।

अध्ययन के उद्देश्य

- पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक दर्शन का विश्लेषण करना।
- "एकात्म मानववाद" की मूल अवधारणा एवं उसके तत्वों का अध्ययन करना।
- उपाध्याय के राजनीतिक विचारों की समकालीन भारतीय राजनीति में प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।
- भारतीय लोकतंत्र और शासन व्यवस्था में उनके दर्शन के व्यावहारिक योगदान को पहचानना।

एकात्म मानववाद की अवधारणा

दीनदयाल के सामाजिक और राजनीतिक चिंतन में एकात्क मानववाद की अवधारणा का विशेश स्थान है। यह दर्शन समाज के मूलभूत निर्माण खंड के रूप में राश्ट्र के महत्व पर जोर देता है। उनका मानना था कि राश्ट्र एक सामूहिक इकाई है, जो नस्लीय, जातीय और धार्मिक सीमाओं से परे है। दीनदयाल के अनुसार राश्ट्र की अवधारणा साझा इतिहास, संस्कृति और आकांक्षाओं वाले व्यक्तियों से बनती है। दीनदयाल के अनुसार मजबूत राश्ट्र अपने नागरिकों की प्रगति और कल्याण के लिए आवश्यक है। दूसरी ओर, दीनदयाल ने राश्ट्र को संचालित करने वाली कानूनी इकाई के रूप में राज्य के महत्व पर भी जोर दिया । उनका मानना था कि राज्य को अपने नागरिकों के अधिकारों और हितों की रक्षा करते हुए राजनीतिक संगठन और प्रशासन के लिए एक रूपरेखा प्रदान करनी चाहिए। दीनदयाल ने सरकार के विकेन्द्रीकृत और सहभागी स्वरूप की वकालत किया, जिसमें नागरिकों को राज्य की दिशा और नीतियों में अपनी बात कहने का अधिकार हों

दीनदयाल का एकात्म मानववाद का विचार सरकार के स्वरूप पर भी प्रकाश डालता है। उनका मानना था कि सरकार को अपने नागरिकों के प्रति जवाबदेह होना चाहिए और राश्ट्र के सर्वोतम हित में कार्य करना चाहिए। उन्होने न्याय, समानता और स्वतंत्रता के सिद्वांत पर आधारित भाासन प्रणाली की वकालत किया। प्रभावी प्रशासन सुनिश्चित करने के लिए दीनदयाल ने एक मजबूत और कुशल नौकरशाही की आवश्यकता पर भी जोर दिया। इसके अलावा, दीनदयाल ने समाज के हाशिए पर मौजूदा वर्गो की जरूरतों को पूरा करने के लिए सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के कार्यन्वयन की भी वकालत कि।

दीनदयाल उपाध्याय ने राश्ट्रवाद की अवधारणा को समझने महत्व पर जोर दिया। उनके दृश्टिकोण के अनुसार एक राश्ट्र को केवल भू–भाग या लोगो के समूह द्वारा परिभाशित नहीं किया जाता है, बल्कि दोनो के सयुक्त सारतत्व से परिभाशित किया जाता है। उन्होंने तर्क दिया कि न तो भूमि का एक टुकडा और न ही लोगों के समूह को अपने आप में एक राश्ट्र माना जा सकता है। उनके विचार पारंपरिक समझ के विपरीत है जो एक राश्ट्र की अवधारणा को एक विशेश या जातीय समूह के आसपास केंद्रित होने पर जोर देते है।

दीनदयाल के लिए राश्ट्र केवल व्यक्तियों का एक समूह नहीं है, बल्कि एक साझा संस्कृति, मूल्य और आकांक्षाएं है। दीनदयाल ने इस बात पर प्रकाश डाला कि दुनिया में कई भू– भाग ऐसे है, जो राश्ट्र होने के मानदंडों पर खरे नहीं उतरते। उदाहरण के लिए , उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव क्षेत्रो का उनके भौगालिक अलगाव और जनसंख्या की कमी के कारण राश्ट्रके रूप में नहीं कहा जा सकता । इसी प्रकार, उन्होंने तर्क दिया कि दक्षिण अफ्रीका में ऐसे कई क्षेत्र है, जिनके पास राश्ट्र के रूप में पहचाने जाने के लिए आवश्यक विशेशताएं नहीं है।

दीनदयाल ने माना कि ऐसे उदाहरण है, जहां लोग राश्ट्रीयता के विकास के बिना विभिन्न द्वीपों और भूमि खंडों में रहते है। इन मामलों में किसी राश्ट्र की अनुपस्थिति क्षमता की कमी के कारण नहीं है, बल्कि राश्ट्रीयता के लिए आवश्यक तत्वों, जैसे साझा इतिहास और पहचान की अनुपस्थिति के कारण है।

दीनदयाल उपाध्याय, राधाकृष्णन और श्री अरबिंदो जैसे आधुनिक भारतीय विचारकों के साथ समानताएं साझा करते हुए कहते है कि मनुश्य सिर्फ एक भौतिक इकाई से कही अधिक है। यह विचार मानव अस्सितत्व के अंतनिहित आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आयम को पहचानते है।

'भारतीय लोकतंत्र और शासन व्यवस्था में उनके दर्शन का व्यावहारिक योगदान

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक दर्शन भारतीय लोकतंत्र को उसकी सांस्कृतिक और नैतिक जड़ों से जोड़ता है। उन्होंने राजनीति को सेवा का माध्यम माना और कहा कि शासन व्यवस्था का उद्देश्य केवल प्रशासन नहीं, बल्कि लोककल्याण होना चाहिए। उनके ''"एकात्म मानववाद"'' सिद्धांत ने शासन की दिशा को मनुष्य–केंद्रित और मूल्यनिष्ठ बनाने की प्रेरणा दी।

भारतीय लोकतंत्र में "अंत्योदय" का सिद्धांत–अर्थात् समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति तक विकास की पहुँच उनके विचारों से ही प्रेरित है। आज की अनेक सरकारी योजनाएँ जैसे 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, जनधन योजना, उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत मिशन' आदि इसी अंत्योदय दर्शन के व्यावहारिक रूप मानी जा सकती हैं।

उन्होंने विकेन्द्रीकृत शासन व्यवस्था पर बल दिया और ग्राम स्वराज की अवधारणा को लोकतंत्र की वास्तविक आत्मा बताया। यह विचार भारतीय संविधान के पंचायती राज ढाँचे में स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने प्रशासन में नैतिकता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को सर्वोपरि माना, जो आज "गुड गवर्नेंस" के मूल सिद्धांत हैं।

आर्थिक क्षेत्र में भी उन्होंने "स्वदेशी" और "आत्मनिर्भरता" को विकास का आधार बताया। आज के "आत्मनिर्भर भारत" अभियान में उनके विचारों की प्रतिध्वनि सुनाई देती है।

इस प्रकार, दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक दर्शन ने भारतीय शासन व्यवस्था को एक सांस्कृतिक, नैतिक और मानवीय दिशा प्रदान की है, जो लोकतंत्र को केवल संस्थागत ढाँचे से आगे बढ़ाकर लोककल्याण की जीवंत भावना में परिवर्तित करती है।

'समकालीन प्रासंगिकता और आलोचनात्मक विवेचन''

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक दर्शन केवल बीते समय की वैचारिक परिकल्पना नहीं है, बल्कि आज के भारत के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिदृश्य में भी इसकी महत्ता निर्विवाद है। उनका "एकात्म मानववाद" सिद्धांत एक ऐसी जीवन–दृष्टि प्रस्तुत करता है जिसमें व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रेरणा है। आज जब विश्व पूँजीवादी उपभोक्तावाद और प्रतिस्पर्धा की मानसिकता से जूझ रहा है, तब उपाध्याय का यह दर्शन भारतीय संस्कृति के आधार पर विकास का वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत करता है।

उनके अनुसार राष्ट्र का विकास केवल आर्थिक प्रगति से नहीं, बल्कि चारों पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के संतुलन से संभव है। आधुनिक भारत की नीति–निर्माण प्रक्रिया में यह विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे यह संकेत मिलता है कि शासन के सभी प्रयास मनुष्य–केंद्रित होने चाहिए, न कि केवल उत्पादन या उपभोग पर केंद्रित। वर्तमान शासन नीतियों में "आत्मनिर्भर भारत", "वोकल फॉर लोकल", "ग्रामोन्मुख विकास" और "समग्र शिक्षा" जैसे कार्यक्रमों में दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

उनकी अवधारणा में राजनीतिक शक्ति का उद्देश्य समाज की सेवा और व्यक्ति के सर्वांगीण विकास से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा था कि राजनीति को समाज के नैतिक मूल्यों के अधीन होना चाहिए। आज जब राजनीति सत्ता, लाभ और व्यक्तिगत स्वार्थों का माध्यम बनती जा रही है, तब उपाध्याय के विचार नैतिक राजनीति की पुनर्स्थापना की दिशा में प्रेरक हैं।

सामाजिक दृष्टि से भी उनका एकात्म मानववाद "अंत्योदय" के सिद्धांत पर आधारित है । अर्थात् समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति तक विकास की किरण पहुँचना ही राजनीति का वास्तविक उद्देश्य है। यह विचार आज के सामाजिक न्याय, समावेशी विकास और मानवाधिकार विमर्शों से अत्यंत सुसंगत है।

आर्थिक दृष्टि से दीनदयाल उपाध्याय ने "विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था" की आवश्यकता पर बल दिया था। उन्होंने पश्चिमी औद्योगिक मॉडल की अंधानुकरण की आलोचना करते हुए यह कहा कि भारत की आर्थिक संरचना को अपने सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप विकसित किया जाना चाहिए। वर्तमान समय में जब वैश्विक आर्थिक असमानताएँ और बेरोज़गारी बढ़ रही हैं, तब उनका "स्वदेशी" और "आर्थिक आत्मनिर्भरता" का विचार अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

पर्यावरणीय दृष्टि से भी उनका चिंतन उल्लेखनीय है। उन्होंने प्रकृति के साथ मनुष्य के सामंजस्यपूर्ण संबंध को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग बताया। आज जब जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट विश्व स्तर पर चुनौती बने हुए हैं, तब उनका यह दृष्टिकोण टिकाऊ विकास की भारतीय अवधारणा को पुष्ट करता है।

आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो उनके राजनीतिक दर्शन की एक सीमा यह है कि उसका व्यावहारिक कार्यान्वयन एक व्यापक वैचारिक अनुशासन और नैतिक प्रतिबद्धता की मांग करता है, जो वर्तमान राजनीति में कम दिखाई देती है। कुछ आलोचक यह भी मानते हैं कि एकात्म मानववाद की अवधारणा में सैद्धांतिक गहराई के बावजूद उसका स्पष्ट प्रशासनिक ढाँचा परिभाषित नहीं किया गया है। फिर भी, यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि उपाध्याय का दर्शन भारतीय राजनीतिक चिंतन को एक स्वदेशी दिशा प्रदान करता है और पश्चिमी विचारधाराओं पर निर्भरता को चुनौती देता है।

समकालीन भारत में जब राजनीति और समाज दोनों ही नैतिक संकटों से जूझ रहे हैं, तब दीनदयाल उपाध्याय के विचार एक वैकल्पिक नैतिक–राजनीतिक चेतना का आधार बन सकते हैं। उनका राजनीतिक दर्शन न केवल भारत के लिए, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए मानवीय मूल्यों पर आधारित शासन प्रणाली की प्रेरणा प्रदान करता है।

निष्कर्ष

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक दर्शन भारतीय जीवन–दृष्टि का एक सशक्त प्रतिरूप है, जो पश्चिमी विचारधाराओं से भिन्न होकर भारतीय समाज की आत्मा से जुड़ा हुआ है। उन्होंने राजनीति को केवल शासन या सत्ता की प्रक्रिया न मानकर, उसे मानवीय कल्याण का माध्यम बताया। उनके द्वारा प्रतिपादित "एकात्म मानववाद" ने भारतीय चिंतन को यह दिशा दी कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र एक–दूसरे से पृथक नहीं, बल्कि एकात्म संबंध से बंधे हुए हैं।

उपाध्याय के राजनीतिक दर्शन में "अंत्योदय" का सिद्धांत अर्थात् समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति के कल्याण की भावना केंद्र में है। यह विचार आधुनिक लोकतंत्र के उस सिद्धांत से मेल खाता है, जिसमें प्रत्येक नागरिक के समान अवसर और सम्मानता की बात की गयी है। उनका दृष्टिकोण समरस समाज, नैतिक राजनीति और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की ओर उन्मुख था।

आज के परिवेश में जब राजनीति स्वार्थ से प्रेरीत है तब हमें दीनदयाल जी के विचारं नैतिकता, सेवा और समरसता के मार्ग पर लौटने की प्रेरणा देते हैं। उनके राजनीतिक दर्शन की प्रासंगिकता इस तथ्य में निहित है कि यह भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुडे हुए है और आधुनिक युग की चुनौतिय का सामना दृढता से करते है।

अतः यह निष्कर्ष स्पष्ट है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक दर्शन न केवल भारतीय राजनीति के नैतिक पुनर्निर्माण की दिशा देता है, बल्कि विश्व राजनीति में भी एक संतुलित, मानवीय और धर्माधारित व्यवस्था के निर्माण का मार्ग सुझाता है। उनका एकात्म मानववाद आज भी भारत के विकास की आत्मा के रूप में जीवंत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, दीनदयाल (1965). एकात्म मानववाद. नई दिल्ली, भारतीय जनसंघ प्रकाशन।
2. उपाध्याय, दीनदयाल (1972). राजनीतिक डायरी. लखनऊरू भारतीय विचार केंद्र।
3. मधोक, बलराज (1980). दीनदयाल उपाध्याय विचारक और कर्मयोगी. दिल्ली प्रभात प्रकाशन।
4. शर्मा, राधेश्याम (2005). भारतीय राजनीति में दीनदयाल उपाध्याय का योगदान. जयपुर राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. तिवारी, रमेशचंद्र (2012). भारतीय चिंतन और आधुनिक राजनीति. वाराणसी, ज्ञान भारती।
6. त्रिपाठी, वी.एन. (2018). "एकात्म मानववाद और भारतीय लोकतंत्र", भारतीय राजनीति समीक्षा, खंड 12, अंक 3।
7. चतुर्वेदी, मुनिन्द्र मोहन, पं. दीनदयाल उपाध्याय की समाज विज्ञान को देन, इटावा, शोध ग्रन्थ, 1988
8. उपाध्याय, दीनयाल, एकात्म मानवदर्शन– विवेचन, सिद्धान्त एवं तत्व मीमांसा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018.

❑❑❑